शब्दावली

हिंदी वर्णमाला के अनुसार

अंत:करन (अन्तःकरण)	भीतरी इंद्रिय जिस पर संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण आदि का दायित्व है। इसके चार विभाग है — मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
अंतरहित	लगातार, शाश्वत, स्थायी,
अंतर रहित	अभेद, निष्पक्ष
अकल	अविभाजित, पूर्ण, रूप-रंग रहित
अकाम	वासना-रहित, इच्छा-विहीन
अकारन [अकारण]	स्वत:, स्वयंभू
अग जग	चराचर जगत के प्राणी
अगोचर	अदृश्य, परमात्मा का निर्गुण रूप
अजपा	जो बिना वाणी से जप किये स्वयं घटता रहता है
अजरा [अजर]	काल-विजित, अमर, परमात्मा की उपाधि
अद्वैत	अभेद का सिद्धांत, भारतीय दर्शन का एक अंग
अध्यातम [अध्यात्म]	आत्म-ज्ञान का प्रयास और मार्ग
अनघ	शुद्ध, अकलंक
अनहद [अनाहद]	वह स्पंदन जो बिना किसी प्रकार के आघात के स्वयं-स्फुट है
अनातम [अन्-आत्म]	जो आत्मा के ज्ञान से सम्बंधित न हो
अनीह	वासना या इच्छा रहित
अनुत्रास	भय से मुक्त
अभिजित	विजयी, नक्षत्र का नाम
अभूत	जो पहले कभी न हुआ हो, अभूतपूर्व, विलक्षण
अभेद	भेद-भाव रहित, ऐसे पदार्थ जिनमें कोई अंतर न हो, साम्य

DOI 10.30687/978-88-6969-892-7/002

अमर धाम	मुक्ति पद जो अनंत है
अमर पद	मुक्ति प्राप्ति
अमानी	मान-अपमान की चिंता से मुक्त
अरक्त	सादा, श्वेत, रंग-रहित
अरूता	विरक्त, निस्पृह
अलख	जो देखा न जा सके, अज्ञात, लुप्त
अलि	साथी, किसी नारी की सहेली
अलेख	अवर्णनीय, जो हर प्रकार के लेखे-जोखे से परे हो, परमात्मा की उपाधि
अवधूत [अवधू]	एक विरक्त साधु जो हर प्रकार की सीमा से ऊपर उठ चुका हो
अविगति [अ-वि-गत]	जिसका अंत न हो, अमर, अदृश्य, ईश्वर की उपाधि
अविद्या	माया जनित मूढ़ता या अनित्य ज्ञान
अविनाशी [अबिनासी]	जिसका नाश सम्भव नहीं, अमर, ईश्वर की उपाधि
अव्यक्त	जिसका आविर्भाव न हुआ हो, जिसे अभिव्यक्त न किया गया हो, जिसे जाना न जा सके
अशोक	शोक-रहित, नाना प्रकार की चिंताओं के आक्षेप से मुक्त
अष्ट अंग [अष्टांग]	योग का एक प्रकार, जिसके आठ अंग हों
अष्ट सिद्धि	आठ प्रकार की अतींद्रिय सिद्धियाँ
असंक [अशंक]	शंका-रहित, भय-रहित, आत्मविश्वासी
असार	तुच्छ, खोखला, क्षणभंगुर, सतही
असोच [अ-सोच]	उन्मुक्त, फक्कड़
अहंकार	अहं के प्रति आस्था, घमण्ड
आज्य	आहुतियोग्य सामग्री, जैसे पिघला मक्खन
आतम	(आतमा, आत्मा)
आतमज्ञानी [आत्मज्ञानी]	आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ऐसा व्यक्ति जिसने अपने विषय में जानकर ईश्वर को जान लिया हो
आतम रुप [आत्मरुप]	अपना शाश्वत रुप, अपनी सूक्ष्म वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान
आत्म प्रकाश [आत्म-प्रकाश]	अपनी आत्मा के अनुसंधान से उत्पन्न ज्ञान का प्रकाश
आबरन	आम जीवन में इस शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं जैसे आभूषण, या ढँकी हुई कोई वस्तु। विवेकसार में बाबा कीनाराम ने 'बरन-आबरन' कह कर ईश्वर के निर्गुण स्वरुप को इंगित किया है।
ओल	सुरक्षित, आश्वस्त, आत्मविश्वासी
इंद्रिय जित [इंद्रियजित]	ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी सभी इंद्रियों, और उनके उत्पाद इच्छाओं को वश में कर लिया हो
इंद्री [इन्द्रिय]	पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ - आँख, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा, पाँच कर्मेंद्रियाँ - वैखरी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ, और एक मन - ये ग्यारह इंद्रियाँ मानी गई हैं
उद्योत	प्रकाश, ज्योति, चमक
उभय	दोनों
एक रस	जो एक समान बना रहे, जिसमें परिवर्तन न हो
एनी	नदी
औध	समुद्र, ज्वार
कमल	एक पुष्प जो भारतीय अध्यात्म में पवित्रता, ज्ञान, मुक्ति, और सहस्रार का प्रतीक है
कर्म बंध	कारण-परिणाम के नियम से उत्पन्न कर्मों के प्रभाव
काया परिचय	शरीर का ज्ञान, किंतु भारतीय अध्यात्म में यह सूक्ष्म शरीर और उसके अवयवों को इंगित करता है

काल	समय, पल, अवधि, मृत्यु
कुसंग	बुरे लोगों, आदतों, कर्मों का साथ
कृतपाल	उपकार करने वाला
खानि [खान]	आम भाषा में खान का अर्थ है खदान, किंतु मध्ययुगीन संतों की भाषा में यह चार प्रकार के जंतुओं के उद्भव का द्योतक है
गजकुंभ [गज-कुंभ]	हाथी के मस्तक का ऊपरी गोल हिस्सा
गतखेद	ऐसा व्यक्ति जिसके सभी दु:ख और ग्लानि के भाव लुप्त हो चुके हों
गम [गमन, गमि, गमनत, गमु]	रास्ता, जाना, पहुँचना, समझना
घट	आम भाषा में घड़ा, किंतु भारतीय अध्यात्म में मानव-शरीर का रूपक
चिदानंद	परमात्मा की निरंतर बनी रहने वली आनंद कीस्थिति, ईश्वर का एक नाम
चित्त	सोच-विचार,संकल्प-विकल्प की शक्ति का इंद्रिय, हृदय
चेतन	ऐसा प्राणी जिसमें जीवन-शक्ति का संचार बना हुआ हो, अध्यात्म में ‹चैतन्य› का अर्थ पूर्ण सजगता और सर्वज्ञता है
चोर समाय	चोर की तरह चुपचाप छिपा रहना
चौगान	पोलो की तरह के खेल का मैदान या क्षेत्र
चौदिश	सभी दिशाओं में; चंद्रमा के 15 दिन के पक्ष में चौदहवाँ दिन
छाया-पथ	आकाशगंगा
छाया-लोक	दृश्यमान भौतिक जगत से परे की दुनिया
छिति [क्षिति]	पृथ्वी, ज़मीन
जंतर [यंत्र]	आम भाषा में किसी प्रकार की मशीन, तंत्र में कुछ आकार या कोष्ठक जिनमें विभिन्न देवताओं की स्थापना होती है
जगत्रास	जगत में जीवन-धारण करने पर होने वाला कष्ट, दु:ख, विपत्ति आदि
जगदानंद	संसार को आनंद प्रदान करने वाली शक्ति, परमात्मा का एक नाम
जगद्वंद	जगत में जीवन जीने के लिये करने वाला संघर्ष, ऊहा-पोह, और उन सब से उपजी अशांति
जड़	ऐसा जीव जिसमें गति न हो, जैसे पेड़-पौधे; मूर्ख व्यक्ति
जरद	सुनहरे या पीले रंग का
जरा	बुढ़ापा और उससे उत्पन्न व्याधियाँ
जरा मरन [जरा-मरण]	बुढ़ापा और मृत्यु
जाति पाँति	जाति प्रथा और उसके सिद्धांत
जान	ज्ञान, जानना, समझ, विचार; यान; जाना
जीव	ऐसा शरीरधारी जिसमें प्राण-संचरण हो रहा हो; आत्मा से भिन्न, कर्म बंधन में बँधा अपने वास्तविक रुप से अनभिज्ञ प्राणी
जोग [योग, योग्य]	योग; योग्य; किसी कार्य के सम्पादन के लिये उचित व्यक्ति
ठहराय	रखे रहना, रोककर रखना, स्थिर रहना या रखना
डाइन	भूतनी, राक्षसी, दुष्टा
तवति	प्रसार करना, बढ़ना, विस्तार करना, फूलना-फलना
त्रिधा	तीन प्रकार से, तीन तरह के आयामों से युक्त
त्रिविध छंद	तीन प्रकार के छंद
त्रिविध ताप	जीवित प्राणी को जलाने वाली तीन प्रकार की दैहिक, दैविक या आध्यात्मिक अग्नि
त्रैशूल	जीवित प्राणी को होने वाले तीन प्रकार के आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक कष्ट
दिस-विदिस [दिश-विदिश]	सभी दिशाओं में

दुरंता [दुरंत]	अंतहीन, अनंत
दुहेला	कठिन, संघर्षमय, दुर्लभ
धराधर	पृथ्वी को धारण करने वाला, पृथ्वी को स्थायित्व प्रदान करने वाला, जैसे शेषनाग
धात [धातु]	पंचमहाभूत; खनिज या लोहा इत्यादि; शरीर के अंदर उपस्थित सप्त धातु
नखत [नक्षत्र]	तारा; चंद्रमा के आकाशीय मार्ग में पड़ने वाले तारों का समूह
नर नाय	नर-नारी, स्त्री-पुरुष
नव खंड	पौराणिक साहित्य में भूमि के नौ विभाग, यथा भरत, इलावर्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश
नव निद्धि	कुबेर के कोष में नौ प्रकार की दुर्लभ वस्तुएँ, यथा पद्म, महापद्म, शंख, मकर, नील, कुंद, कच्छप, मुकुंद, खर्व
निगम	वेद अथवा वेद सम्बंधित ग्रंथ
निज पराय	अपना-पराया, शत्रु-मित्र, स्वजन-परजन
निरंजन	माया से निर्लिप्त ईश्वर का एक नाम
निरंतर	लगातार; बिना अवरोध; अनंत
निरबान [निर्वाण]	साधना की परिणति पर मुक्ति या अनंत ईश्वर के साथ योग की अवस्था
निराकार	बिना किसी रुप-रंग अथवा विशेष चरित्र का; ईश्वर का निर्गुण द्योतक
निरालंब	बिना किसी संबल या आधार के; स्वयं पर आश्रित
निर्गुन [निर्गुण]	बिना किसी रुप-रंग-आकार का; ईश्वर का गुणातीत स्वरुप
निर्भय पद	सदा निर्भीक बने रहने की स्थिति; सभी प्रकार के भय से मुक्ति
निवृत्ति	मुक्ति या मोक्ष, छुटकारा; प्रवृत्ति का अभाव
निस्प्रेह [निःस्पृह]	कामना या इच्छा रहित; उदासीन
पय	आम भाषा में दूध अथवा जल सरीखा तरल पदार्थ, अध्यात्म में सूक्ष्म तत्त्व का द्योतक
पर पीरा [परपीड़ा]	दूसरों का दुःख-दर्द
परम तत्त्व	ब्रह्म, सर्वोच्च सत्ता
परमानंद	साधना की परिणति पर उत्पन्न कल्पनातीत आनंद
पवन	वायु; श्वास; प्राण-वायु
पाँच भूत [पंचभूत]	सृष्टि संरचना के मूल तत्त्व, यथा पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु
पिंड	अध्यात्म में जीवित प्राणी या मानव शरीर का द्योतक
पौना	आम भाषा में कलछुल जैसी वस्तु; विवेकसार में ‹पवन›, यानी शरीर में उपस्थित वायु के लिये प्रयुक्त
प्रकृति	वह मूल शक्ति जिससे अनेक रूपों में सृष्टि का विकास हुआ है
प्रजंत [पर्यन्त]	विस्तार, सीमा रेखा; सम्मिलित
प्रनव [प्रणव]	भारतीय अध्यात्म में वह प्रथम ध्वन्यात्मक स्फुरण जिसे ‹ॐ› या ‹ओम्› कहकर इंगित करते हैं
प्रवृत्ति	किसी वस्तु की ओर झुकाव; अंतर्वृत्ति, मनोवृत्ति
प्रान [प्राण]	श्वास-प्रश्वास की वह प्रक्रिया जिससे जीवित प्राणी में प्राण बना रहता है
प्रान प्रतिष्ठा [प्राण प्रतिष्ठा]	किसी मूर्ति अथवा अन्य वस्तु में प्राण का अभिषेक करना
बज्र काय [वज्रकाय]	इंद्र के अपराजेय अस्त्र की तरह कठोर काया; हीरे की तरह कठोर शरीर; भयोत्पादक काया
बहिरंतर	अंदर-बाहर; हर स्थान पर
बानी	आम भाषा में बोलने के ढंग, स्वर इत्यादि; संतों की उक्तियाँ; चार प्रकार के ध्वन्यात्मक स्पंदन जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ जैसे ‹परा›, ‹पश्यंति›, ‹मध्यमा› और ‹वैखरी›
बुध	बुद्धिमान, शिक्षित, विज्ञ व्यक्ति; हमारे सौरमण्डल में सूर्य के सबसे समीप का ग्रह

बेनी [वेणी]	आम भाषा में स्त्रियों की चोटी, किंतु विवेकसार में नदियों के संगम, जैसे त्रिवेणी, के लिये प्रयुक्त
ब्रह्म	सृष्टि की परम सत्ता या परमात्मा का बोधक
ब्रह्ममय	जो ब्रह्म के ही चरित्र, उसी की अवस्था में रम रहा हो
ब्रह्माण्ड	ब्रह्म-अण्ड - संसार, या सृष्टि उत्पत्ति के प्रथम चरण का बोधक
ब्रह्मानंद	वह आनंद जो ईश्वर की ईश्वरीय अवस्था का ज्ञान होने पर प्राप्त होता है
भव	उत्पत्ति, जन्म; संसार, जगत
भव फाँस	जगत का जंजाल, माया-जनित संसार में फँस जाना
भाव-अभाव [भावाभाव]	होना या न होना; उत्पत्ति और लय या नाश
भुक्ति	लैकिक सुख, विषयों का उपभोग
भूतन [भूत]	पंचमहाभूत; भक्त या उपासक; सभी प्रकार के जीव
भुवन	ब्रह्माण्ड का एक क्षेत्र; संसार
मन	जीवित प्राणियों की वह शक्ति जिससे उनमें सोच, बोध, अनुभव, प्रेरणा, वेदना, विचार आदि का संचार होता है
महि सुत [महीसुत]	मंगल ग्रह; मंगल ग्रह को अवनि अर्थात् पृथ्वी का पुत्र माना गया है
माया	भ्रम, अविद्या, अज्ञानता
मुक्ति	जन्म-मरण के निरंतर चल रहे आवागमन चक्र से छूट जाना; निर्वाण अवस्था की प्राप्ति
मोह	भ्रम, अविद्या, भ्रांति; संसार में किसी भी वस्तु को स्थायी या अपना मान लेने से उत्पन्न दुःख
योग-युक्ति [जोग-युक्ति]	योग में रम जाना
रजहिं [रज]	धूल; रजोगुण
रजोगुण	सृष्टि रचना में अनिवार्य तीन प्रकार के चारित्रिक गुणों में से एक, जैसे सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण
रवि मंडल	वह लाल मंडलाकार बिंब जो सूर्य के चारों ओर दिखाई देता है; रविबिंब
रसना	जिह्वा; स्वाद लेने की इंद्रिय
रिष्ट अरु पुष्ट	हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, खाया-पिया
रुद्र	भगवान शिव के भयंकर या संहारक रुप का द्योतक
लग्न	किसी उत्सव के लिये उचित मुहूर्त की गणना में एक शुभ मुहूर्त
लाह	लाभ, फायदा, अनुकम्पा
वर्णाश्रम	जाति-पाँति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था; जीवन की चार अवस्थाओं के अनुसार कर्म जैसे ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास
विकटाद्रि	दुर्गम पर्वत
विकाल	काल यानी मृत्यु का विलोम शब्द, यथा, जन्म
विज्ञान	संसार में सक्रिय रहने के लिये आवश्यक ज्ञान; बुद्धि, समझ, अनुभव, प्रयास पर आधारित ज्ञान
विरंचि	ब्रह्मा का एक नाम
वेदी	किसी धार्मिक कार्य के लिये तैयार की गई ऊँची भूमि; योग में दृढ़ आसन
वैराग्य	संसार की वस्तुओं के प्रति अनिच्छा, उदासीनता; राग से विरक्ति
शक्ति	देवी का बोधक; बल; सामर्थ्य
शब्द	ध्वनि; स्पंदन, आहट; ज्ञान
शुभाशुभ	अच्छा-बुरा
शेषनाग	शास्त्रों में वर्णित वह महान् सर्प जिस पर अनंत काल में विष्णु विश्राम करते हैं
श्रुति	अन्तरतम में अनुभूत ज्ञान; वेद

श्रुति सिद्धांत	वैदिक सिद्धांत
षोडश	सोलह
सतगुरु [सद्गुरु]	एक ज्ञानप्राप्त सच्चे गुरु; ऐसे गुरु जिन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया हो; ईश्वर का बोधक
सत पद	ईश्वर से एकात्म होने की अवस्था
सतसंग [सत्सङ्ग]	संत समाज में विचार-विमर्श; अच्छे लोगों का संग
सतोगुण	सृष्टि रचना में अनिवार्य तीन प्रकार के चारित्रिक गुणों में से एक, जैसे सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण
सप्त पताल [S. सप्त पाताल]	पृथ्वी के गर्भ में कहे गए सात खण्ड, यथा अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल
सप्त लोक [S. सप्त भुवन]	एक के ऊपर सात लोक जैसे भुवर्लोक - पृथ्वी और सूर्य के बीच का स्थान जहाँ सिद्ध और मुनिगण रहते हैं, स्वरलोक - सूर्य के ऊपर ध्रुव तारे तक इंद्र का स्वर्ग, महर्लोक - ध्रुव तारे के ऊपर का क्षेत्र जहाँ भृगु इत्यादि मुनि रहते हैं, जनर्लोक - ब्रह्मा-पुत्र सनत्कुमार का निवास स्थान, तपर्लोक - जहाँ वैरागी रहते हैं, सत्यलोक या ब्रह्मलोक - ब्रह्मा का स्थान जहाँ से पुनर्जन्म नहीं होता
सप्त सिंधु	शास्त्रों में इंगित सात समुद्र जैसे लवण, इक्षु, दधि, क्षीर, मधु, मदिरा, घृत
सहज	प्राकृतिक; आसान; तंत्रिक साधना की एक पद्धति जिसमें सभी वासनाओं का शमन हो जाता है
सहजानंद	स्वत:उद्भूत आनंद
साक्षी-भाव	साक्षी की तरह किसी प्रक्रिया को देखना
साधना	तपस्या, भक्ति में तन्मय हो जाना
साधु प्रसाद	किसी साधु की प्रसन्नता के फलस्वरुप दिया गया प्रसाद
सिद्ध	वह तपस्वी या संत जिसने इंद्रियातीत शक्तियों को पाने में सफलता प्राप्त कर ली हो
सुकृत	अच्छे कर्म
सुखधाम	ऐसा व्यक्ति या स्थान जहाँ सदा सुख और प्रसन्नता की अनुभूति होती है
सुखमनि [सुषुम्ना]	सुषुम्ना या मध्य नाड़ी
सुन्न [शून्य]	रिक्त; जहाँ कुछ भी न हो; ब्रह्मरंध्र
सुरति [सुरत]	स्मृति; ध्यान की अवस्था
सुषमन [सुषुम्णा]	मेरुदण्ड में स्थित मध्य नाड़ी
सोम लोक [सोमलोक]	चंद्रदेव की दुनिया
स्मृति	याद; श्रुति-स्मृति की शास्त्रीय परम्परा
स्वमति	अपनी बुद्धि या धर्म के अनुसार
स्वाती जल [स्वाति जल]	एक नक्षत्र जिसकी अवधि में हुई वर्षा जल की बूँदों को चातक नाम का पक्षी पीता है
स्वेत अंग [श्वेतांग]	सफ़ेद अंगों वाला
हंसा [हंस]	हंस पक्षी; मुक्त आत्मा का द्योतक; जीव में स्थित वह तत्त्व जो परमात्मा का अंश है
हत काल	मृत्यु का क्षण, प्रलय का पल
हित अहित	शत्रु-मित्र, अपना-पराया, हानि-लाभ, शुभ-अशुभ